• बाल कविता...

डब्बू पढ़ता नई किताब...

चलो पार्क में
चलो पार्क में, मौसम कितना प्यारा-प्यारा है!
चलो पार्क में, भैया, आओ साथ-साथ घूमेंगे,
चलो पार्क में, मस्त हवा के साथ जरा झूमेंगे,
चलो पार्क में, देखेंगे हम प्यारे-प्यारे फूल,
चलो पार्क में, सारे दुखड़े जाएंगे हम भूल।
लगता, खुली हवा में मन का उतर गया पारा है!
मम्मी जैसी पप्पी देती, हवा चल रही मीठी,
पापा जैसी दुलराती-सी, गंध हवा की मीठी,
भैया जैसे गुन-गुन करते पक्षी यहां मिलेंगे,
नन्ही मीशा की बातों से चंचल फूल खिलेंगे।
चलो पार्क में, एक नई दुनिया पुकारकर कहती-
तितली जैसी खुशियों से यह भरा जहां सारा है!
पापा, लगता, नई सुबह बस यहीं-यहीं उतरी है,
सात सुरों की सरगम बस, यहीं-यहीं बिखरी है,
पापा, लगता, मेरी मन बस बदल गया बिल्कुल,
पापा, लगता, साथ-साथ जग बदल गया बिल्कुल।
पात-पात में देखो तो, कैसी मस्ती है पापा,
फूल-फूल में बहती यह कैसी रसधारा है!

-प्रकाश मनु

• चुटकुले...

चार शराबी एक जनाजे को उठाकर जल्दी– जल्दी कब्रों के ऊपर से जा रहे थे।
किसी ने कहा –ओए शर्म करो, नीचे मुर्दे हैं।
शराबी–तो ऊपर कौनसा हमने वर्ल्ड कप उठा रखा है।

ग्राहक –भाई चूहे मारने की दवाई देना।
दुकानदार–घर ले जाना है?
ग्राहक – नही चूहा साथ लेकर आया हूं, इधर ही खिला दूंगा।

• जानकारी...

आइसक्रीम..

मौसम कोई सा भी हो, आइसक्रीम खाने का मन करता ही है। यह एक ऐसा डेजर्ट है, जिसे हर कोई खाना चाहता है। आजकल तरह-तरह की आइसक्रीम आ गई हैं। लेकिन इनके आविष्कार की कहानियां भी कम रोचक नहीं हैं। पूरे 4000 साल लगे हैं आइसक्रीम को इन नए-नए रूपों में आने में। अब तक आइसक्रीम का पहला लिखित रिकॉर्ड सीरिया का है। 1780 ईसापूर्व पत्थर पर अंकित प्राचीन लिपि के अनुसार मारी के राजा ने एक आइस हाउस बनवाया था, जिसमें पहाड़ों से बर्फ लाकर जमा की जाती थी। ईरान में ईसा से 500 साल पहले पर्शियन लोग सर्दियों की बर्फ को अपने आइस हाउस में संजोकर रखते थे, जिन्हें यखचल कहा जाता था। पर्शियन भाषा में यख का मतलब बर्फ और चल का अर्थ गड्ढा है। इस बर्फ को वह पूरे साल तक बचाकर रखते थे। उसे वह अंगूर के रस के साथ मिलाकर खाते थे।

करीब 350 वर्ष ईसापूर्व सिकंदर भी आइसक्रीम का बहुत शौकीन था। वह शहद और फूलों के शरबत से बनी आइसक्रीम खाता था, जबकि सन 54 में फ्रांस का शासक नीरो फलों के रस से बनी आइसक्रीम खाता था। चीन का राजा तेंग (सन 618 से 697) दूध से बनी आइसक्रीम खाता था। उसने 90 लोग इसे बनाने के लिए रखे थे। यहां युवराज झांगहुई के मकबरे पर बनी एक पेंटिंग में कुछ महिलाएं आइसक्रीम खा रही हैं।

आइसक्रीम की यह नई रेसिपी इटली का व्यापारी मार्को पोलो (सन 1254-1324) पूर्वी देशों से लेकर वापस लौटा था, जिसे शरबत कहा जाता था। सन् 1533 में इटली की राजकुमारी का विवाह फ्रांस के राजा हेनरी-2 से हुआ था। राजकुमारी अपने साथ कुछ इटेलियन शेफ भी ले आई थी, जो जायकेदार बर्फ की रेसिपी जानते थे। 1660 में पेरिस के एक कैफे ने दूध, क्रीम, मक्खन और अंडे को फेंटकर आइसक्रीम बनाने की रेसिपी को प्रचारित किया।

सन् 1671 में पहली बार ब्रिटेन के शासक चार्ल्स-2 के पास आइसक्रीम पहुंची। वह उससे इतना प्रभावित हुआ कि उसने अपने आइसक्रीम बनाने वाले कुक को इसकी रेसिपी गुप्त रखने के लिए आजीवन पेंशन दी। 1744 में ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी में आइसक्रीम शब्द प्रकाशित हुआ।

रुरु मृग

एक दिन रुरु जब वन में स्वच्छंद विहार कर रहा था तो उसे किसी मनुष्य की चीत्कार सुनायी दी। अनुसरण करता हुआ जब वह घटना–स्थल पर पहुंचा तो उसने वहां की पहाड़ी नदी की धारा में एक आदमी को बहता पाया। रुरु की करुणा सहज ही फूट पड़ी।

वह तत्काल पानी में कूद पड़ा और डूबते व्यक्ति को अपने पैरों को पकड़ने कि सलाह दी। डूबता व्यक्ति अपनी घबराहट में रुरु के पैरों को न पकड़ उसके ऊपर की सवार हो गया...

रुरु एक मृग था। सोने के रंग में ढला उसका सुंदर सजीला बदन; माणिक, नीलम और पन्ने की कांति की चित्रांगता से शोभायमान था।

मखमल से मुलायम उसके रेशमी बाल, आसमानी आंखें तथा तराशे स्फटिक-से उसके खुर और सींग सहज ही किसी का मन मोह लेने वाले थे।

जाहिर है कि रुरु एक साधारण मृग नहीं था। उसकी अप्रतिम सुन्दरता उसकी विशेषता थी। लेकिन उससे भी बड़ी उसकी विशेषता यह थी कि वह विवेकशील था ; और मनुष्य की तरह बात-चीत करने में भी समर्थ था। पूर्व जन्म के संस्कार से उसे ज्ञात था कि मनुष्य स्वभावतः एक लोभी प्राणी है और लोभ-वश वह मानवीय करुणा का भी प्रतिकार करता आया है।

एक दिन रुरु जब वन में स्वच्छंद विहार कर रहा था तो उसे किसी मनुष्य की चीत्कार सुनायी दी। अनुसरण करता हुआ जब वह घटना-स्थल पर पहुंचा तो उसने वहां की पहाड़ी नदी की धारा में एक आदमी को बहता पाया। रुरु की करुणा सहज ही फूट पड़ी। वह तत्काल पानी में कूद पड़ा और डूबते व्यक्ति को अपने पैरों को पकड़ने कि सलाह दी। डूबता व्यक्ति अपनी घबराहट में रुरु के पैरों को न पकड़ उसके ऊपर की सवार हो गया। अनेक कठिनाइयों के बाद भी उस व्यक्ति को अपनी पीठ पर लाद बड़े संयम और मनोबल के साथ किनारे पर ला खड़ा किया।

सुरक्षित आदमी ने जब रुरु को धन्यवाद देना चाहा तो रुरु ने उससे कहा, अगर तू सच में मुझे धन्यवाद देना चाहता है तो यह बात किसी को ही नहीं बताना कि तूने एक ऐसे मृग द्वारा पुनर्जीवन पाया है जो एक विशिष्ट स्वर्ण-मृग है; क्योंकि तुम्हारी दुनिया के लोग जब मेरे अस्तित्व को जानेंगे तो वे निस्सन्देह मेरा शिकार करना चाहेंगे।

कालांतर में उस राज्य की रानी को एक स्वप्न आया। उसने स्वप्न में रुरु साक्षात दर्शन कर लिए। रुरु की सुन्दरता पर मुग्ध; और हर सुन्दर वस्तु को प्राप्त करने की तीव्र अभिलाषा से रुरु को अपने पास रखने की उसकी लालसा प्रबल हुई। तत्काल उसने राजा से रुरु को ढूंढकर लाने का आग्रह किया। उसने नगर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो कोई-भी रानी द्वारा कल्पित मृग को ढूंढने में सहायक होगा उसे वह एक गांव तथा दस सुन्दर युवतियां पुरस्कार में देगा।

राजा के ढिंढोरे की आवाज उस व्यक्ति ने भी सुनी जिसे रुरु ने बचाया था। उस व्यक्ति को रुरु का निवास स्थान मालूम था। बिना एक क्षण गंवाये वह दौड़ता हुआ राजा के दरबार में पहुंचा। फिर हांफते हुए उसने रुरु का सारा भेद उगल डाला।

राजा और उसके सिपाही उस व्यक्ति के साथ तत्काल उस वन में पहुंचे और रुरु के निवास-स्थल को चारों ओर से घेर लिया। राजा ने तब धनुष साधा और रुरु उसके ठीक निशाने पर था। चारों तरफ से घिरे रुरु ने तब राजा से मनुष्य की भाषा में यह कहा-राजन! तुम मुझे मार डालो मगर उससे पहले यह बताओ कि तुम्हें मेरा ठिकाना कैसे मालूम हुआ ?

उत्तर में राजा ने अपने तीर को घुमाते हुए उस व्यक्ति के सामने रोक दिया जिसकी जान रुरु ने बचायी थी। रुरु के मुख से तभी यह वाक्य फूट पड़ा

निकाल लो लकड़ी के कुन्दे को पानी से न निकालना कभी एक अकृतज्ञ इंसान को।

राजा ने जब रुरु से उसके संवाद का आशय पूछा तो रुरु ने राजा को उस व्यक्ति के डूबने और बचाये जाने की पूरी कहानी कह सुनायी। रुरु की करुणा ने राजा की करुणा को भी जगा दिया था। उस व्यक्ति की कृतध्नता पर उसे रोष भी आया। राजा ने उसी तीर से जब उस व्यक्ति का संहार करना चाहा तो करुणावतार मृग ने उस व्यक्ति का वध न करने की प्रार्थना की।

रुरु की विशिष्टताओं से प्रभावित राजा ने उसे अपने साथ अपने राज्य में आने का निमंत्रण दिया। रुरु कुछ दिनों तक वह राजा के आतिथ्य को स्वीकार कर पुनः अपने निवास-स्थल को लौट गया।

• रोचक...

दूरबीन...

विश्व की पहली दूरबीन सन् 1608 में नीदरलैंड के एक चश्मा बनाने वाले व्यक्ति– हेंस लिपरशीद्वारा बनाई गयी थी। लिपरशी ने उसे 'kijker' नाम दिया था। Kijker डच भाषा का शब्द है; जिसका मतलब होता है 'देखनेवाला'। उनकी उस दूरदर्शी से किसी भी वस्तु को दो से तीन गुना बड़ा करके देखा जा सकता था। लिपरशी द्वारा बनाई गई पहली दूरबीन दो लेंसों से मिलकर बनी थी, जिन्हें एक गोलाकार लंबी नली के दोनों ओर लगाया गया था। इसमें आइपीस के रूप में अवतल लेंस और ऑब्जेक्टिव लेंस के रूप में उत्तल लेंस का इस्तेमाल किया गया था।उसी वर्ष हेंस लिपरशी ने अपने इस नये यंत्र के पेटेंट (किसी आविष्कार का पूर्ण अधिकार) के लिए नीदरलैंड की सरकार को एक आवेदन भेजा, जिसे सरकार ने जल्द ही स्वीकार कर लिया तथा इसकी उपयोगिता को देखते हुए पुरस्कार स्वरूप उन्हें 900 फ्लॉरिन (नीदरलैंड की मुद्रा) भी दिये। दूरदर्शी की प्रसिद्धी बढ़ते ही 1608 के अंत तक यह फ्रांस तथा अन्य देशों में भी पहुंच गई।

• पेंसिल शापनर...

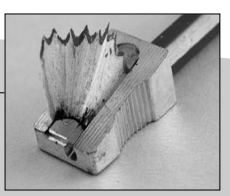

आधुनिक पेंसिल का आविष्कार फ्रांसीसी चित्रकार और वैज्ञानिक निकोलस–जैक्स कंट सन् 1795 में किया था। इसके बाद शुरूआती पेंसिल शापनर बनाने का श्रेय फ्रांसीसी गणितज्ञ बर्नार्ड लैसिमोन को दिया जाता है। लैसिमोन ने सन् 1828 में पहला शापनर बनाया था। हालांकि वह आज के शापनर जैसा नहीं था। जिस तरह का शापनर हम आज उपयोग करते है, लगभग वैसा शापनर अफ्रीकी मूल के अमेरिकी बढ़ई जॉन ली लव ने सन् 1897 में बनाया था।